प्रश्न :- रीतिकालीन वीर-काव्य की विशेषताएँ बताएँ ?

उत्तर :- शेषभाग :-

(6) प्रबन्ध और मुक्तक काव्य-रूप :-

आदिकाल का वीरगाथात्मक साहित्य प्रायः प्रबन्ध-काव्यों के रूप में लिखा गया था, किन्तु रीति या शृंगार-काल का वीर-साहित्य प्रबन्ध-काव्यों के साथ-साथ मुक्तक-काव्यों के रूप में भी लिखा गया। मुक्तक-रूप में लिखे जाने का प्रमुख कारण रीति-परम्परा का अनुगमन है। प्रबन्धात्मकता की दृष्टि से शैलीगत विविधता इस काल के प्रबन्धात्मक रूप में लिखे गये वीर-साहित्य की अपनी विशेषता है। विभिन्न कवियों ने विभिन्न प्रकार की पद्धतियों का उपयोग किया है। कुछ ने कथा को सर्गों में विभाजित किया है, कुछ ने नहीं। काव्य के विस्तार के सम्बन्ध में भी इनमें पर्याप्त अन्तर है। 50 छन्दों की रचना से लेकर हजार छन्दों तक की रचनाएँ उपलब्ध हैं। फिर भी कुछ बातें समान रूप में मिलती हैं। एक तो छन्द-वैचित्र्य की प्रवृत्ति का विकास दृष्टिगोचर होता है। प्रारम्भ में अलग-अलग कवि अपनी-अपनी रुचि के अनुकूल विभिन्न छन्दों का प्रयोग करते रहे, आगे चलकर एक ही कवि द्वारा अनेक छन्दों का प्रयोग होने लगा। यह प्रवृत्ति यहाँ तक बढ़ी कि सूदन ने अपने काव्य में 103 प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया। विभिन्न प्रकार की वस्तुओं, पदार्थों, तत्वों तथा तथ्यों की नामावली और सूचियाँ प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति भी इनमें दृष्टिगोचर होती है; जिसमें अपने ज्ञान का प्रदर्शन करना उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है। मुक्तक रचनाओं में छन्द-वैविध्य दृष्टिगोचर होता है। इस धारा के कुछ कवि रीति-परम्परा से जुड़े हैं और शेष उससे प्रभावित हैं। इसीलिए आदि-काल के अनुपात में रस काल के वीर-रस के वीर-साहित्य का कला-पक्ष अधिक

निखरा हुआ है।

(7) भाषा का असाधारण प्रयोग :

इस धारा के साहित्य में भी इस काल की अन्य धाराओं के समान प्रायः ब्रजभाषा का ही प्रयोग किया गया है, किन्तु विभिन्न कवियों ने अपने प्रान्तीय शब्दों को पर्याप्त मात्रा में अपनाया है। विशेषतः बुन्देलखण्डी कवियों ने ब्रजभाषा में बुन्देलखण्डी शब्दों का प्रयोग बहुत अधिक किया है। अरबी, फारसी, तुर्की आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग भी प्रायः सभी कवियों ने किया है। भूषण ने भी इन शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। भाषा को अधिक-से अधिक प्रवाह-पूर्ण एवं ओजसम्पन्न बनाने के लिए अक्षरों में द्वित्व, संयुक्ताक्षरों, नादात्मक शब्दों का प्रयोग तथा शब्द-रूपों में तोड़-तोड़ की प्रवृत्ति भी दृष्टिगोचर होती है। शृंगार-रस के क्षेत्र में जो ब्रजभाषा अत्यन्त कोमल, मधुर एवं कमनीय-सी प्रतीत होती थी, वही इस क्षेत्र में अत्यन्त ऊबड़-खाबड़ एवं ओजपूर्ण हो जाती है। अनेक बार तो उसका स्वरूप यहाँ तक बदल जाता है कि वह कोई अन्य भाषा-सी लगने लगती है। भाषा को ओजपूर्ण बनाने के लिए उसकी तोड़-मरोड़ तब तक तो स्वाभाविक मानी जा सकती है, जब तक उसकी अर्थ-सम्प्रेषणशीलता बनी रहती हो, किन्तु कहीं-कहीं वह निरर्थकता का आभास भी देने लगती है, जैसे 'सुजानचरित' की इसी प्रकार की शब्दावली को देखिए —

"धड़धड्डरं धड़धड्डरं भड़भब्भरं भड़भब्भरं।
तड़तत्तरम् तड़तत्तरम् कड़कक्करम् कड़कक्करम् ॥"

ऐसे प्रयोगों के अतिरिक्त शेष स्थान पर की गयी भाषा की तोड़-मरोड़ भी ओजपूर्णता के लिए स्वाभाविक और आवश्यक मानी जा सकती है।

अतः ऐतिहासिक व्यक्तियों की घटनाओं के

प्रस्तुतीकरण, समकालीन वातावरण की अभिव्यक्ति, शैली, छन्द एवं भाषा के क्षेत्र में नूतन प्रयोग और सबसे महत्वपूर्ण है – इस पतनशील विलासी युग में वीरता, राष्ट्रीयता और स्वाभिमान के ओजपूर्ण स्वरों को मुखरित करके अल्पमात्रा में ही क्यों न हुआ हो, चेतना के संचरण का प्रयास इस धारा के साहित्य ने अवश्य लिया है।

(8) रीति अथवा शृंगार-काल का अन्य साहित्य :–

रीति-,

स्वच्छन्द और वीर-साहित्य इस काल की प्रमुख साहित्य धाराएँ रही हैं। इनके अतिरिक्त पूर्व-काल की भक्ति-धारा भी इस युग में प्रवाहित है, लेकिन वह अपना पूर्ववर्ती रूप खो चुकी है, इसीलिये इस काल में वह अपना अलग अस्तित्व नहीं दिखा पायी है। भक्ति के अतिरिक्त 'नीति-साहित्य' की भी धारा क्षीण-रूप में ही सही, इस काल में प्रवाहित हुई है और विभिन्न धाराओं का गद्य-साहित्य उपलब्ध होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

1. प्रश्न:- रीतिकाल के रचित वीर-काव्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए?
2. प्रश्न:- कविवर भूषण के काव्य में देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता पर प्रकाश डालिए?
3. प्रश्न:- रीतिकाल में भूषण के योगदान पर सोदाहरण प्रकाश डालिए?

पता:–
डॉ० सत्यदर्शी कुमार
विभाग – हिन्दी (D.R.A.P.G) (B.R.A.B.U.M)
मो० न०– 7909046087
दिनांक – 24.02.2022